National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2016; 1(5): 64-65
© 2016 NJHSR
www.sanskritarticle.com
Received: 14-04-2016
Accepted: 15-04-2016

रचना तिवारी
शोध छात्रा,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर

Correspondence:
रचना तिवारी
शोध छात्रा,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर

राजशेखर के रूपकों में सामाजिक संदर्भ

रचना तिवारी

संस्कृत साहित्य के कवियों एवं नाटककारों में आचार्य राजशेखर का स्थान महत्त्वपूर्ण है। संस्कृत रूपकों की रचना से कवि का उद्देश्य सहृदय को मात्र क्षणिक आनन्दानुभूति उत्पन्नकराना ही नही होता अपितु वे सहृदय के हृदय में परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति मानवीय भावनाओं का संचार भी उत्पन्न कराना होता है। अतः आचार्य राजशेखर ने बालरामायण, बालभारत, काव्यमीमांसा, विद्धशालभंजिका, कर्पूरमंजरी की रचना की है। राजशेखर ने रूपकों के माध्यम से जिन विविध तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के सन्दर्भों का संकेत किया है वे न केवल वर्तमान शास्त्रीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है अपितु संस्कृति, धर्म, समाज एवं राष्ट्रीयता के लिए भी उपयोगी है।

(1) रहन-सहन:

पारिवारिक जीवन के सुखदबनाने के लिए पति-पत्नि को सदाउद्यमशील होना चाहिए। परिवारमें मधुरता का वातावरण हो, परस्पर आपस में मधुर वचन बोले। बालक-बालिकाएँ, माता-पिता के आज्ञाकारी हों।[1]

विश्व की किसी भी जाति की संस्कृति और सभ्यता का पता उसके रहन-सहन तथा आचार-विचारों से लगता है। उसके आचार-विचारों का परिचायक उसका साहित्य है और रहन-सहन का परिचायक उसका पहनावा अर्थात् वेष-भूषा।[2] साधारणवस्त्रों को भी हमने शरीर पर कितने कलात्मक एवं आकर्षक ढंग से पहना अथवा धारण किया है।[3] संभवतः ऊनी, सूती और रेषमी तीनों प्रकार के वस्त्रों का उत्पादन होता था। कर्पूरमंजरी नाटिक में उपर्युक्त सभी बातों का उल्लेख किया गया है, जो वर्तमान समय में भी इसका प्रभाव देखने को मिलता है।

(2)रीति-रिवाज:

रीतियाँ अथवा प्रथाएँ सामाजिक संगठन का अंग है। रीतियाँ समाज के निर्माण में आधारभूत कार्य करती है तथा समाज में व्यवस्थाएँ बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब रीतियों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित किया जाता है तो वे प्रथाओं के नाम से जानी जाती[4] सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित अनेक प्रथाएँ पाई जाती है जैसे- खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, विवाह, धर्म, जाति, शिक्षा इत्यादि रीतियाँ। ये सभी रीतियाँ व्यक्ति को विशेष प्रकार से समाज में व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है।[5] रीति-रिवाज के अन्तर्गत कुछ प्रमुख प्रथाएँ निम्न है-

(क.) विवाह: वैवाहिक परम्परा हमें वैदिककाल से प्राप्त हुई तथा विरासत रूप में आज भी विद्यमान है। इसमें पाणिग्रहण, अग्नि-परिक्रमा, षिलारोहण, लाजा, होम, सप्तपदी, ध्रुवदर्षन, सुमंगलीकरण मुख्य थे। विवाह जीवन भर के लिए होता था। पत्नी के लिए पतिव्रता धर्म है तो पति के लिए पत्नीव्रतत्व दोनों जीवन भर के लिए सहचर होते है।[6] राज-परिवार आदि में बहुविवाह का भी प्रचलन था।[7]

बहु-विवाह के प्रमुख चार रूप पाये जाते है- बहुपतिविवाह, बहुपत्नीविवाह, द्विपत्नीविवाह एवं समूहविवाह आदि।[8] आचार्य राजशेखर ने अपनी रचना कर्पूरमंजरी में वैवाहिक उत्सव का वर्णन किया है जिसे भैरवानन्द नामक योगीश्वर राजा और रानी का विवाह सम्पन्न कराता है।

(ख.) शिक्षा: इसमें शारीरिक, योगविद्या, शस्त्र-अस्त्र विद्या, मल्लविद्या, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गणित, ज्योतिष आदि सभी षिक्षा के विषय थे।[9]शिक्षा के प्रायः जितने भी प्रकार प्रचलित थे उनमें उत्कृष्ट शिल्प की शिक्षाएँ सर्वोत्तम मानी गयी थीं । कर्पूरमंजरी नामक नाटिका में महारानी ने पद्यरागमणि की गौरी की प्रतिमा बनवाकर भैरवानन्द से उसकी प्राणप्रतिष्ठा करवाई और भैरवानन्द को गुरू बनाकर उनसे इष्टमन्त्र ग्रहण किया।ज्योतिष शिक्षा का भी वर्णन किया गया है।[10]

(3) वेश-भूषा: वैदिककाल में वस्त्र उद्योग पर्याप्त उन्नत अवस्था में था।वस्त्र बनाने का काम अधिकांषतः स्त्रियाँ करती थी।[11] स्त्री पुरुष दोनों अधोवस्त्र और ऊपर अंगरखा पहनते थे। उत्तरीय और मेखला धारण करने का भी प्रचलन था। स्त्रियाँ साड़ी, चोली और पुरुष धोती तथा शरीर में कपड़े लपेटे हुए सिर पर पगड़ी पहनते थे। नृत्य के समय स्त्रियाँ लहंगे पहनती थी।जिस पर जरीकी बुनाई की जाती थी।[12] कर्पूरमंजरी नामक सट्टक में कवि ने इन सभी बातों का उल्लेख किया है।

(4) कला-कौशल: प्राचीनकाल में नृत्य, गीत, वाद्य, कविता, नाटक, कहानी सुनाना, उत्सव मनाना और कला-कौशल आदि मनोरंजन के अनेक साधन विद्यमान थे।कर्पूरमंजरी नाटिका में नृत्य, कला, नटी के लिए उचित वस्त्रों को बनाना, माला बुनना तथा पगड़ी आदि का वर्णन किया है जो आज के समय में उनका अनुसरण करके उस कार्य को करने का तरीका बदल दिया गया है। अतः नाच का स्वरूप अलग हो गया है जो मानव समाज में इसका प्रभाव पड़ा है।

(5) धार्मिकः समाज में तरह-तरह के धार्मिक अनुष्ठान प्रचलित थे। कुछ अनुष्ठानों का व्यापक धार्मिक महत्त्व था। ब्राह्मण ऐसे अनुष्ठानों के समर्थक थे । धर्मिक अनुष्ठानों के कई प्रकार थे जिन्हें करने में जनसाधारण अपनी सहज रुचिका परिचय देता था।[13] कर्पूरमंजरी नामक सट्टक में राजशेखर ने धार्मिक अनुष्ठान का चित्रण किया। इस कार्य को भैरवानन्द बड़ी निपुणता के साथ सम्पन्न कराता है। धार्मिककार्य में चतुर्थी के दिन महारानी गौरी का पूजन करती है। भैरवानन्द धार्मिक विधि से राजा तथा रानी का विवाह कराता है।

(6) आर्थिक: तत्कालीन समाज में अनेक शिल्पों एवं व्यवसायों का उदय हो चुका था और व्यावसायिक वर्गों का जमघट बढ़ चुका था। आर्थिकसाधनों में कृषि, पशुपालन, उद्योग, उत्पादन, व्यापार, कारीगरी और स्वर्ण आदि धातुओं का नाम मुख्य है। इन्ही साधनों पर तत्कालीन समाज की आर्थिक प्रगति निर्भर है।[14] कृषि करने और माल से भरी गाड़ी खीचने के लिए बैलों तथा घोड़ों को विषेष रूप से उपयोग में लाया जाता था। तत्कालीन समाज में अर्थव्यवस्था में पशुपालन की मुख्य भूमिका रही है।लोग अपने घरों में भेड़-बकरी, सुअर, हाथी, गाय, बैल इत्यादि पशुओं को पालते थे। घरेलु पशुओं में गाय का स्थान सर्वोपरि था।[15] कर्पूरमंजरी नाटिका में आर्थिक स्थिति का वर्णन आचार्यराजशेखर ने किया है। लोग अपने घरों में बैल, गाय आदि को पालते थे।व्यापार में घी, दूध, दही आदि का उल्लेख हुआ है

(7) पारिवारिकस्थिति: परिवार ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का आधार है। उसकी सुव्यवस्था, शान्ति और उन्नति पर ही व्यक्ति समाज और राष्ट्र की उन्ति निर्भर है। उस समय 'कुल' के गठन का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान था। पिता या बड़ा भाई कुल का श्रेष्ठ या स्वामी हुआ करता था।[16] प्रिवार का मुखिया गृहपति कहलाता था जो अपने आश्रितजनों के भरण-पोषण का दायित्व वहन करता था परिवार में सभी सम्बन्ध परस्पर एक दूसरे से जुड़े थे।

अतः आचार्य राजशेखर की रचना कर्पूरमञ्जरी में पारिवारिक स्थिति का उल्लेख हुआ है जो वर्तमान समय में भी दर्शनीय है। इसप्रकार आचार्य राजशेखर द्वारा रचित रूपकों में सम्पूर्ण भारतीय आचार-विचार, रहन-सहन एवं धार्मिक क्रियाकलापों को भली-भाँति समझने के लिए प्रचुर सामग्री विद्यमान है।

सन्दर्भसूचीः-

1.वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, पृ. 258-259

2.वैदिक साहित्य और संस्कृति, पृ. 412-413

3.वही पृ. 413

4.समाशास्त्र पृ. 219

5.वही पृ. 220

7.वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, पृ. 261

8.वही पृ. 261

9.समाशास्त्र पृ. 311

10.वही पृ. 263

11.कर्पूरमंजरी चतुर्थ जवनिकान्तर पृ. 145

12.वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, पृ. 264

13.वही पृ. 476

14.वही पृ. 144

15.वही पृ. 429

16.पालि निकायो में प्राचीन भारत की आर्थिक एवं सामाजिक संस्थाएं पृ. 212